ISSN : 2320-7604
RNI NO. : DELHIN/2008/27588
UGC Care Approved Research journal
October, 21, Part 1, Serial.No. 143

त्रैमासिक

बहुरि नहिं आवना

अंक-24
जुलाई, 2023 - सितंबर, 2023
मूल्य : 200 रुपए

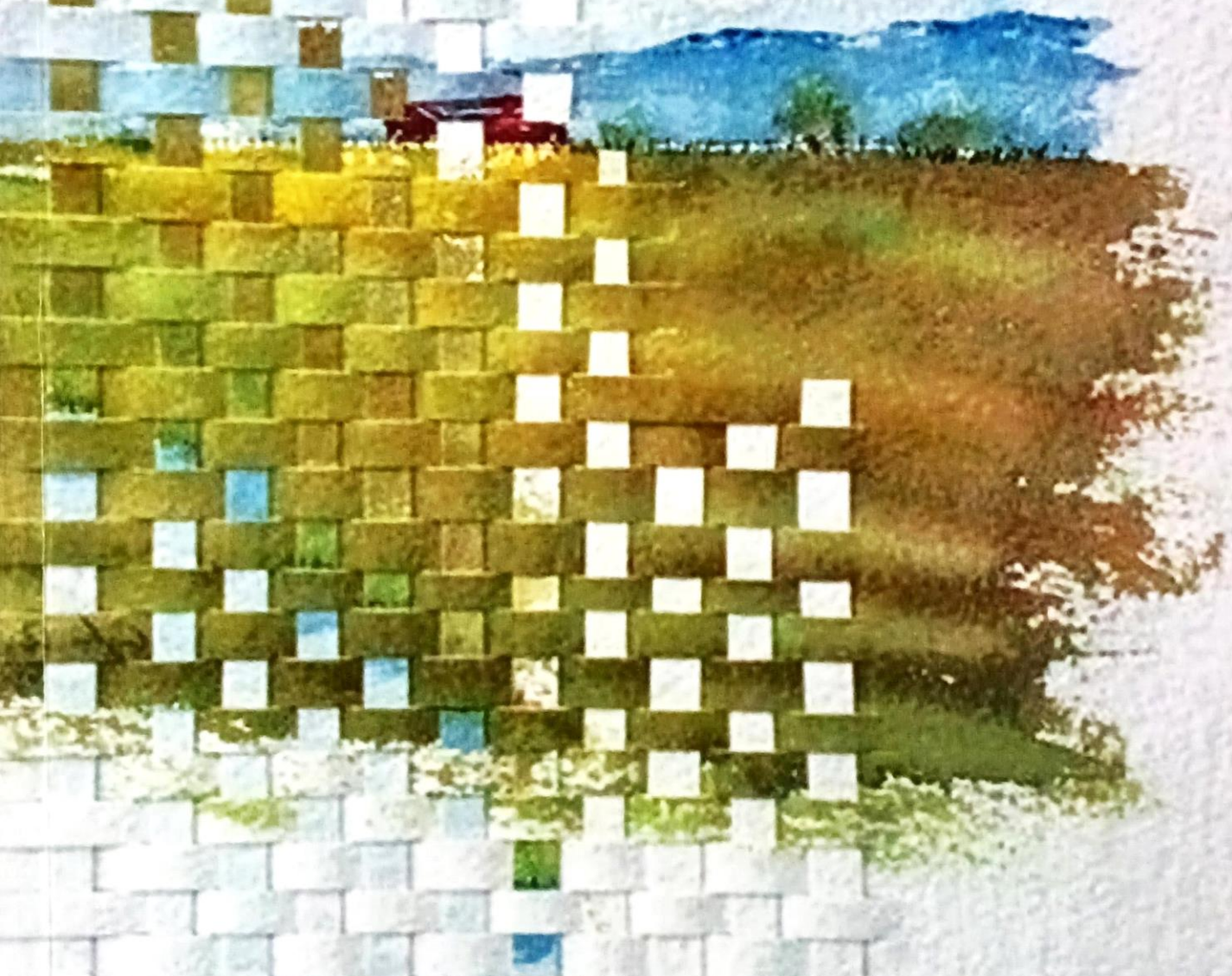

आजीवक महासंघ ट्रस्ट द्वारा निर्गत

संस्कृति, धर्म, दर्शन और साहित्य

अनुक्रम

संपादकीय	–दिनेश राम	5
1. आर्य आक्रमण सिद्धान्त और डॉक्टर भीमराव अंबेडकर	–डॉ. पिन्टू कुमार –डॉ. प्रेम कुमार	6
2. हिंदी भाषा और लिपि के संरक्षण-संवर्धन में बालमुकुंद गुप्त की भूमिका	–डॉ. चन्द्रकान्त सिंह	10
3. डॉ. शंकर शेष के नाटक 'रत्नगर्भा' में चित्रित नारी जीवन में प्रेम का आत्मसंघर्ष	–बृजेश यादव	14
4. सजातीय विवाह जाति प्रथा की जड़ है–डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	–डॉ. दीपा	18
5. दलित साहित्यकार श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कहानियों में मानवीय मूल्य	–मनीषा	22
6. अज्ञेय-काव्य में बुद्ध	–डा. विनीता गुप्ता	26
7. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद के काव्य में प्रेम और सौन्दर्यवादी चेतना	–रूबी सिंह	29
8. 1857 के महासंग्राम में महाकौशल अंचल के विस्मृत नायक : अमर शहीद राजा शंकरशाह एवं कुँवर रघुनाथ शाह	–गोविन्द पाण्डेय –पूजा दाहिया	32
9. दिव्या उपन्यास में अभिव्यक्त राजनीतिक दृष्टिकोण	–मौहम्मद समीर मनिहार	36
10. वर्तमान सामाजिक परिवेश में बुजुर्ग पीढ़ी : एक व्यावहारिक अध्ययन	–डॉ. हरेन्द्र कुमार –डॉ. हरिन्द्र कुमार	40
11. महर्षि दयानन्द जी के विचारों पर आधारित आर्य समाज का कन्या शिक्षा के लिए किए गये प्रयासों का अध्ययन	–डॉ अनीता सिंह –लता शर्मा	44
12. आदिवासी अस्मिता और स्वतंत्र भारत के उपनिवेश	–प्रफुल्ल कुमार रंजन	48
13. भारत में महिला सशक्तीकरण	–डॉ. ज्योति सिंह –रिचा सेंगर	51
14. टूटता-बिखरता प्रवासी जीवन	–डॉ. ब्रह्मा नंद	54
15. मुक्तिबोध के काव्य में मार्क्सवादी प्रेरणा	–राकेश कुमार	58
16. निर्मला पुतुल की कविताएं व आदिवासी स्त्री	–डॉ. ज्योति गौतम	61
17. आदिवासी जीवन संघर्ष और वर्तमान चुनौतियाँ	–शुभम यादव	64
18. प्रारंभिक औपनिवेशिक काल के भारत में वन नीति और वन संरक्षण	–महेन्द्र सिंह	68
19. 1857 का महान विद्रोह एवं लखनऊ रेजीडेंसी की घेराबंदी : एक पुनरावलोकन	–अभय पाण्डेय	72
20. भारत-म्यांमार सांस्कृतिक, धार्मिक एवं पारस्परिक सम्बन्ध : एक दृष्टि	–डॉ. पुष्कर पाण्डेय	77
21. महाकवि अश्वघोष की कृतियों में सामाजिक एवं धार्मिक जीवन	–डॉ. नीमा जोशी	81
22. कहानी का प्लॉट कहानी में चित्रित यथार्थ	–डॉ. जी. वी. रत्नाकर	85

हिंदी भाषा और लिपि के संरक्षण-संवर्धन में बालमुकुंद गुप्त की भूमिका

—डॉ. चन्द्रकान्त सिंह

बालमुकुंद गुप्त भारतेंदु युग के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। बात यदि उनके भाषा संबंधी लेखों की करें तो उनमें हिंदी की जातीय भावना एवं गौरव की रक्षा का बोध अधिक है। अपने लेखों द्वारा हिंदी भाषा को समृद्ध करते हुए वे एक नया प्रतिमान रचते हैं। अंग्रेजों ने भारत के संदर्भ में विभाजक रेखा खींची और हिंदी और उर्दू को दो कौमों की भाषाएँ बताकर भारतीयों को लड़ाने का प्रयास किया। बालमुकुंद गुप्त जी इसके घोर विरोधी हैं। उन्होंने हिंदी और उर्दू को कभी भी दो विलग भाषाओं के रूप में स्वीकृति नहीं दी। उनकी स्पष्ट मान्यता है कि हिंदी और उर्दू दो बोलियाँ हैं। भारत के पुनर्निर्माण और एकीकरण में दोनों की अनिवार्य सत्ता है। यही कारण है कि उन्होंने दोनों को ही भारत के विकास के लिए उपयोगी माना। वह हिंदी और उर्दू में लिपिगत अंतर ही स्वीकारते हैं। इस संदर्भ में उनका राष्ट्र भाषा और लिपि नामक निबंध अति महत्वपूर्ण हो जाता है जिसमें लेखक ने हिंदी भाषा की व्युत्पत्ति और विकास के साथ उसके प्रसार में योगदान देने वाले साहित्यकारों को पूरी श्रद्धा से याद किया है। वे भली-भाँति जानते थे कि राजा शिव प्रसाद सितारे हिंद, राजा लक्ष्मण सिंह एवं भारतेंदु हरिश्चन्द्र के अवदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। हिंदी भाषा पर विचार करते हुए उनका मानना है कि हिंदी के प्रशंसकों को उर्दू एवं उर्दू के चिंतकों को हिंदी का ज्ञान आवश्यक है तभी दोनों ओर के साहित्यकारों में भारतीय-बोध का विकास होगा अन्यथा वे संकीर्ण मानसिकता लिए हुए एक-दूसरे के धुर विरोधी हो जाएँगे। इस पर विचार करते हुए वह लिखते हैं—'जो लोग उर्दू के अच्छे कवि और ज्ञाता हैं, वे हिंदी की ओर ध्यान देना कुछ आवश्यक नहीं समझते। इसी से देवनागरी अक्षर भी नहीं सीखते और भारतवर्ष के साहित्य से निरे अनभिज्ञ हैं। अरब और फारस के साहित्य की ओर खिंचते हैं। साथ-साथ भारतवर्ष के साहित्य से घृणा करते और जी चुराते हैं। उधर हिंदी के प्रेमी भी उर्दू की ओर कम दृष्टि रखते हैं और उर्दू वालों को अपनी ओर की बातें ठीक ठीक समझाने की चेष्टा नहीं करते। यदि दोनों ओर से चेष्टा हो तो इस भाषा की बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।' बालमुकुंद जी के पास उनका स्पष्ट नैतिक विवेक था। वह अच्छी तरह जानते थे कि अंग्रेज भारतीयों को छोटे-छोटे दलों वर्गों में बाँटकर उन पर शासन करना चाहते